आईएनएस वागीर

हाल ही में [प्रोजेक्ट-75] की **INS 'वागीर'** नाम की **5वीं** [सक्रॉर्पीन क्लास पनडुब्बी] भारतीय नौसेना को सौंपी गई है।

- यह **कलवरी श्रेणी की डीज़ल-इलेक्ट्रिक अटैक पनडुब्बी यार्ड 11879** है, जिसे कमीशन किये जाने पर **आईएनएस वागीर** नाम दिया जाएगा।

//

INS वागीर:

- **पृष्ठभूमि:**
    - वागीर-I, पूर्व में रूस से प्राप्त की गई सबमरीन को 3 दिसंबर, 1973 को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया था और लगभग तीन दशकों तक देश की सेवा करने के बाद 7 जून, 2001 को सेवामुक्त किया गया था।
    - सार्वजनिक जहाज़ निर्माता मझगाँव डॉक लिमिटेड (MDL) ने इसी नाम की पनडुब्बी को एक नया अवतार दिया।
- **परिचय:**
    - इसका नाम सैंड फिश के नाम पर रखा गया है, जो हिंद महासागर की एक खतरनाक शिकारी है।
    - यह भारत में बनाई जा रही **कलवरी-श्रेणी की पनडुब्बियों** का ही एक अंग है।
        - कलवरी-श्रेणी की पनडुब्बियों में **युद्ध-रोधी और सबमरीन-रोधी संचालन**, **खुफिया जानकारी एकत्र करने और निगरानी** तथा माइन बिछाने सहित विभिन्न प्रकार के **नौसेना युद्धों में संचालन की क्षमता है।**
    - **सबमरीन में इस्तेमाल की गई अत्याधुनिक तकनीक:**
        - निगरानी से बचने में बेहतर रूप से सक्षम, उन्नत ध्वनिक अवशोषण तकनीक, कम विकिरणित शोर स्तर और हाइड्रो-डायनामिक रूप से अनुकूलित आकार।
        - सटीक निर्देशित हथियारों का उपयोग करके दुश्मन पर हमला करने की क्षमता।
    - यह पनडुब्बी **लगभग सभी प्रकार की परिस्थितियों में संचालित करने के लिये डिज़ाइन की गई है,** जो नौसेना टास्क फोर्स के अन्य घटकों के साथ अंतर्संचालनीयता (इंटरऑपरेबिलिटी) का प्रदर्शन करती है।
    - यह **जल के नीचे या सतह पर टॉरपीडो और ट्यूब लॉन्च एंटी-शिप मिसाइल दोनों** के साथ हमला कर सकती है।
    - यह विविध प्रकार के कार्यों में सक्षम है जैसे कि सतह-रोधी युद्ध, पनडुब्बी-रोधी युद्ध, खुफिया जानकारी एकत्र करना, माइन बिछाना, क्षेत्र की निगरानी आदि।
- **महत्त्व:**
    - भारतीय यार्ड में इन पनडुब्बियों का निर्माण **'आत्मनिर्भर भारत' की दिशा में एक और कदम है तथा इस क्षेत्र में आत्मविश्वास बढ़ाता है,** एक उल्लेखनीय उपलब्धि यह है कि यह 24 महीने की अवधि में भारतीय नौसेना को दी जाने वाली तीसरी पनडुब्बी है।

प्रोजेक्ट -75:

- **परिचय:**
    - यह **भारतीय नौसेना का एक कार्यक्रम है** इसमें स्कॉर्पीन डिज़ाइन की छह पनडुब्बियों का स्वदेशी निर्माण शामिल है।

            - स्कॉर्पीन **एक पारंपरिक संचालित पनडुब्बी है** जिसका वज़न 1,500 टन है और यह 300 मीटर की गहराई तक जा सकती है।
        - मझगाँव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL) अक्तूबर 2005 में हस्ताक्षर किये गए 3.75 अरब डॉलर के सौदे के तहत **फ्राँस के नौसेना समूह से प्रौद्योगिकी सहायता के साथ छह स्कॉर्पीन पनडुब्बियों का निर्माण कर रही है।**
        - प्रोजेक्ट 75 में **छह पनडुब्बियों का स्वदेशी निर्माण शामिल है।**
    - **परियोजना-75 के तहत अन्य सबमरीन:**
        - **पहली सबमरीन INS कलवरी** को भारतीय नौसेना में दिसंबर 2017, **दूसरी** सबमरीन INS खंडेरी को सितंबर 2019 में, **तीसरी** सबमरीन INS करंज को मार्च 2021 में और **चौथी** INS वेला को नवंबर 2021 में सेवा में शामिल किया गया था।
        - छठी और आखिरी **सबमरीन वाग्शीर को 2023 के अंत तक नौसेना को सौंपे जाने की उम्मीद है।**

स्रोत: पी.आई.बी.

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ins-vagir